नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर प्रशिक्षण

[हिन्दी – **Hindi** – هندي]

हुमाम बिन अब्दुर्रहमान अल-हारिसी

अनुवाद : **अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**

2013 - 1434

IslamHouse.com

التربية على حب النبي ﷺ

« باللغة الهندية »

همام بن عبد الرحمن الحارثي

ترجمة : عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान करदे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर प्रशिक्षण और पालन पोषण

इस उम्मत पर अल्लाह सर्वशक्तिमान की यह अनुकम्पा और अनुग्रह है कि उसने इसे सबसे अंतिम और सबसे श्रेष्ठ उम्मत बनाया है, जैसाकि हदीस में आया है : ''हम अंत में आनेवाले प्रलय के दिन आगे रहनेवाले हैं।'' (सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 3486)

तथा इस उम्मत के पैगंबर को समस्त ईश्दूतों और संदेष्टाओं में श्रेष्ठतम और उन सबकी अंतिम कड़ी बनाया है, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत को धर्म क़रार दिया है जिसके द्वारा हम अल्लाह सर्वशक्तिमान की उपासना व आराधना करते हैं, और उसके द्वारा उसकी निकटता चाहते हैं।

इस लेख में हम अपने नफ्स की पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर प्रशिक्षण और पालन पोषण के तरीक़े के बारे में बात करेंगे।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर पालन पोषण और प्रशिक्षण के साधनों में से कुछ निम्नलिखित हैं :

❖ **हर मुसलमान को यह ज्ञात होना चाहिए कि वह पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के पालन के माध्यम से ही स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है,** तथा उसकी कोई उपासना स्वीकार नहीं की जायेगी जब तक कि वह पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई शरीअत के अनुसार न हो, जैसाकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है:

﴿ قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ﴾ [آل عمران: ٣١]

''कह दीजिए अगर तुम अल्लाह तआला से मोहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, स्वयं अल्लाह तआला तुम से मोहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और अल्लाह तआला बड़ा माफ करने वाला और बहुत मेहरबान (दयालु) है।'' (सुरत–आल इम्रान : 31)

और आपकी सुन्नत का पालन, आपके मार्गदर्शन, आप के तौर तरीक़े और आप से प्रमाणित चीज़ों का अनुसरण करके होगा।

शैखुल इस्लाम रहिमहुल्लाह ने फरमाया :

''इस अध्याय में हमारा नियम सबसे शुद्ध है ; कर्मों और कथनों से संबंधित पूजा के सभी गुण यदि इस तरह प्रमाणित रूप से वर्णित हैं कि उनको अपनाना ठीक है, तो उसमें से कोई चीज़ अनेच्छिक नहीं है, बल्कि वह सब के सब धर्मसंगत हैं।'' (फतावा 24/242)

तथा उन्हों ने फरमाया : ''और जिस काम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विभिन्न प्रकार से किया है, तो यद्यपि यह कहा गया है कि : उन में से कुछ प्रकार सर्वश्रेष्ठ हैं ; परंतु इस बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण इस तरह से करना कि कभी उस काम को इस तरीक़े से

किया जाए और कभी दूसरे प्रकार से किया जाए, दोनों में से किसी एक प्रकार को लाज़िम पकड़ने और दूसरे प्रकार को छोड़ देने से बेहतर है . . . ।'' (फतावा 22/337)

❖ **पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर प्रशिक्षण और पालन पोषण के साधनों में से – अल्लाह सर्वशक्तिमान के निकट पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पद व सम्मान की जानकारी है :**

अल्लाह के निकट पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठा बहुत महान है, और आपका पद बहुत सम्मानित व प्रतिष्ठित है, अल्लाह ने आपको सभी मानवजाति पर चुन लिया और पसंद कर लिया है, और आपको सभी ईश्दूतों और संदेष्टाओं पर प्राथमिकता प्रदान की है, आपके लिए आपके सीने को खोल दिया है, आपका चर्चा बुलंद कर दिया है, आपके बोझ को उतार दिया है, और आपके पद व स्थान को सर्वोच्च कर दिया है।

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने हर चीज़ में आपकी प्रशंसा की है :

आपकी बुद्धि की प्रशंसा की हैं, चुनाँचे अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَى ﴾ [النجم: ٢].

"तुम्हारे साथी ने न रास्ता खोया है न वह टेढ़े रास्ते पर है।" (सूरतुन नज्म : 2)

तथा आपकी सत्यता और सच्चाई की प्रशंसा की है, चुनाँचे फरमाया :

﴿ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَى ﴾ [النجم: ٣].

"और वह अपनी इच्छा से कोई बात नहीं कहते हैं।" (सूरतुन नज्म : 3).

तथा आपकी दृष्टि की प्रशंसा की है, चुनांचे फरमाया :

﴿ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ﴾ [النجم: ١٧].

"न तो निगाह (दृष्टि) बहकी, न वह सीमा से बढ़ी।" (सूरतुन नज्म : 17).

तथा आपके हृदय की प्रशंसा की है, चुनांचे फरमाया :

﴿ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى ﴾ [النجم: ١١].

''दिल ने झूठ नहीं बोला जो कुछ उसने देखा।'' (सूरतुन नज्म : 11).

तथा आपके सीने की प्रशंसा की है, जैसाकि फरमाया :

﴿ أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴾ [الشرح: ١].

''क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना खोल नहीं दिया।'' (सूरतुश शरह : 1).

तथा आपके चर्चा की प्रशंसा की है, चुनांचे फरमाया :

﴿ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴾ [الشرح: ٤].

''और हम ने तेरा चर्चा बुलंद कर दिया।'' (सूरतुश शरह : 4).

तथा आपकी पवित्रता की प्रशंसा की है, चुनांचे फरमाया :

﴿ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴾ [الشرح: ٢].

''और आपके ऊपर से आपका बोझ उतार दिया।'' (सूरतुश शरह : 2).

तथा आपकी सहनशीलता की प्रशंसा की है, जैसा कि अल्लाह का फरमान है :

﴿ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ﴾ [التوبة: ١٢٨].

''ईमान वालों के साथ बड़े ही दयालु और मेहरबान हैं।'' (सूरतुत तौबा : 128).

तथा आपके ज्ञान की प्रशंसा की है, चुनांचे अल्लाह सर्वशक्तिमान का फमरान है :

﴿ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَى ﴾ [النجم: ٥].

उसे मज़बूत शक्ति वाले फरिश्ते (जिब्रील) ने सिखाय है।'' (सूरतुन नज्म : 5).

तथा आपके आचरण व नैतिकता की प्रशंसा की है, जैसाकि अल्लाह का फरमान है :

﴿ وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ ﴾ [القلم: ٤].

''निःसन्देह आप महान आचरण – अखलाक़ – से सम्मानित हैं।'' (सूरतुल क़लम : 4).

फिर सर्वसांर के पालनहार के निकट, और निकटवर्ती फरिश्तों के निकट आपके स्थान की सूचना दी है, चुनाँचे फरमाया :

﴿ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ﴾ [الأحزاب: ٥٦]

''निःसन्देह अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते पैग़म्बर पर दुरूद भेजते हैं।'' (सूरतुल अहज़ाब : 56)

फिर धरती वालों में से विश्वासियों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ने का आदेश दिया ताकि आपके लिए आकाश वालों और धरती वालों दोनों की तरफ से प्रशंसा एकत्रित हो जाए, जैसा कि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴾ [الأحزاب: ٥٦].

''ऐ ईमान वालो तुम भी आप पर दरूद और सलाम भेजते रहा करो।'' (सूरतुल अहज़ाब : 56)

तथा सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से वर्णित है कि आप ने फरमाया :

"मेरा और मुझ से पहले के पैग़म्बरों का उदाहरण उस व्यक्ति के समान है जिसने एक घर बनाया, उसे संवारा और सजाया किन्तु उसके एक कोने में केवल एक ईंट की जगह ऐसे ही छोड़ दिया। लोग उसकी परिक्रमा करने लगे और उस पर आश्चर्य प्रकट करने लगे और कहने लगे : यह एक ईंट क्यों

नहीं रखी गई ? पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “तो मैं ही वह ईंट हूँ, और मैं सारे नबियों की अंतिम कड़ी हूँ।” (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 3535, व सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 2286)

❖ **तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर प्रशिक्षण और पालन पोषण के साधनों में से उम्मत पर आपकी दया व करूणा को याद करना है,** क्योंकि दिल अपने से प्यार करने वाले और उसके ऊपर उपकार करने वाले से प्राकृतिक रूप से प्यार करता है। इसी में से यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआला के इस फरमान की तिलावत की :

﴿ رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴾ [إبراهيم: ٣٦]

‘‘हे मेरे पालनहार, उन्हों ने बहुत से लोगों को रास्ते से भटका दिया है, अब मेरी पैरवी करने वाला मेरा है, और जो

नाफरमानी करे तो तू बहुत ही माफ और रहम करने वाला है।'' (इब्राहीम : 36)

तथा ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह के इस फरमान की तिलाव की :

﴿إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ [المائدة: ١١٨]

''यदि तू इन्हें सज़ा दे तो ये तेरे बंदे हैं और अगर तू इन्हें माफ कर दे तो तू ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।'' (सूरतुल मायदा : 118).

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोने लगे, तो अल्लाह तआला ने आप के पास जिब्रील अलैहिस्सलाम को भेजा और फरमाया : ''ऐ जिब्रील! मुहम्मद से पूछो कि वह क्यों रो रहे हैं?'' –हालांकि वह सबसे अधिक जानता है – तो जिब्रील उतरे और कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर! आप क्यों रो रहे हैं ? आप ने फरमाया : ''मेरी उम्मत . . मेरी उम्मत ऐ जिब्रील'', तो जिब्रील महान राजा के पास ऊपर गए और कहा : वह अपनी उम्मत पर रो रहे हैं, और अल्लाह तो सबसे अधिक जानता है,

तो अल्लाह ने जिब्रील से कहा : ''मुहम्मद के पास जाओ और उनसे कहो : हम आपको आपकी उम्मत के विषय में प्रसन्न कर देंगे।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 202)

तथा सहीह बुख़ारी में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''प्रत्येक नबी के लिए एक स्वीकृत दुआ रही है जो उसने की है, और मैं अपनी दुआ को परलोक में अपनी उम्मत की शफाअत (अभिस्ताव) के लिए संचित करना (यानी बचा कर रखना) चाहता हूँ।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 6304)

तथा सहीह बुखारी में आया है कि एक आदमी ने एक (परायी) महिला को चुंबन कर दिया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और आपको इसकी सूचना दी, तो उस समय अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित की :

﴿ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ﴾ [هود: ١١٤]

"और आप नमाज़ क़ायम करें दिन के दोनों किनारों में और रात की कुछ घड़ियों में, निःसंदेह नेकियाँ, बुराईयों को मिटा देती हैं।" (सूरत हूदः ११४)

तो उस आदमी ने कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर! क्या यह केवल मेरे लिए है ? आप ने फरमाया : ''मेरी उम्मत के सभी लोगों के लिए है।'' (बुख़ारी, हदीस संख्या : 526).

❖ **तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर नफ्स के प्रशिक्षण और पालन पोषण के साधनों में से क़ियामत के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी उम्मत के लिए शफाअत को याद करना है,** अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अल्लाह तआला क़ियामत के दिन लोगों को इकट्ठा करेगा, तो वे लोग शफाअत के लिए चिंता करेंगे, चुनाँचे वे कहेंगे : अगर हम अपने पालनहार के पास किसी की शफाअत ढूंढें ताकि वह हमें हमारे इस स्थान से नजात दिलाए। रावी (यानी हदीस वर्णन करने वाले) कहते हैं : तो वे लोग आदम

अलैहिस्सलाम के पास आयेंगे और कहेंगे : आप मानव पिता आदम है, अल्लाह ने आपको अपने हाथ से पैदा किया, और आपके अंदर अपनी ओर से रूह (प्राण) डाली और फरिश्तों को आदेश दिया तो उन्हों ने आपको सज्दा किया, आप हमारे लिए अपने पालनहार के पास शफाअत करें कि वह हमें हमारे इस स्थान से नजात दे, तो वह कहेंगे : मेरा यह स्थान नहीं है (यानी मैं इस लायक़ नहीं हूँ)। चुनाँचे वह अपनी उस गलती को याद करेंगे जो उनसे हुई थी, तो वह उस गलती पर अपने रब से शर्म महसूस करेंगे, (वह कहेंगे) परंतु आप लोग नूह अलैहिस्सलाम के पास जाएं जो कि अल्लाह के भेजे हुए प्रथम रसूल (पैगंबर) थे। चुनाँचे वे नूह अलैहिस्सलाम के पास आयेंगे तो वह कहेंगे : मैं इसका योग्य नहीं हूँ, और वह अपनी उस गलती को यदि करेंगे जो उनसे हुई थी, तो उस पर अपने पालनहार से शर्म महसूस करेंगे, (वह कहेंगे) किंतु आप लोग इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाएं जिन्हें अल्लाह ने दोस्त बनाया था, तो वे इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आयेंगे, तो वह कहेंगे : मैं इसका योग्य नहीं हूँ, और वह अपनी उस गलती को याद करेंगे जो उनसे हुई थी, जिसकी

वजह से वह अपने पालनहार से र्शम महसूस करेंगे, (वह कहेंगे) किंतु आप लोग मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाएं जिनसे अल्लाह ने बात चीत की, और उन्हें तौरात प्रदान किया, चुनाँचे वे मूसा अलैहिस्सलाम के पास आयेंगे, तो वह कहेंगे कि : मैं इसका योग्य नहीं हूँ, और वह अपनी उस गलती को याद करेंगे जो उनसे हो गई थी, जिसकी वजह से वह अपने पालनहार से शर्म महसूस करेंगे, (वह कहेंगे) किंतु आप लोग अल्लाह के रूह व कलिमा ईसा अलैहिस्सलाम के पास जाएं। चुनाँचे वे अल्लाह के रूह व कलिमा ईसा अलैहिस्सलाम के पास आयेंगे, तो वह कहेंगे कि : मैं इसके लिए योग्य नहीं हूँ, और वह अपनी उस गलती को याद करेंगे जो उनसे हो गई थी, जिसकी वजह से वह अपने पालनहार से शर्म महसूस करेंगे, (वह कहेंगे) परंतु आप लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जायें, जो एक ऐसे बंदा हैं जिनके अगले और पिछले पाप क्षमा कर दिए गए हैं, तो वे लोग मेरे पास आयेंगे, मैं अपने पालनहार से अनुमति प्राप्त करूँगा, तो मुझे अनुमति प्रदान कर दी जायेगी, जब मैं उसे देखूँगा तो सज्दे में गिर जाऊँगा, तो जितना अल्लाह चाहेगा

मुझे उसी हालत में छोड़ देगा, फिर कहा जायेगा : ऐ मुहम्मद! अपना सिर उठाएं। कहें, सुना जायेगा। माँगें, दिया जायेगा। शफाअत करें, शफाअत स्वीकार की जायेगी। तो मैं अपना सिर उठाऊँगा और अपने पालनहार की ऐसे शब्दों के द्वारा स्तुति और प्रशंसा करूंगा जो मेरा पालनहार मुझे सिखायेगा। फिर मैं शफाअत करूंगा, तो मेरे लिए एक सीमा निर्धारित कर दी जायेगी, तो मैं उन्हें नरक से निकालूँगा, और स्वर्ग में दाखिल करूँगा, फिर मैं वापस लौटकर सज्दे में गिर जाऊँगा, तो अल्लाह जितना चाहे गा मुझे सज्दे की हालत में छोड़े रखेगा, फिर कहा जायेगा : ऐ मुहम्मद! अपना सिर उठाएं। कहें, सुना जायेगा। माँगें, दिया जायेगा। शफाअत करें, शफाअत स्वीकार की जायेगी। तो मैं अपना सिर उठाऊँगा और अपने पालनहार की ऐसे शब्दों के द्वारा स्तुति और प्रशंसा करूँगा जो मेरा पालनहार मुझे सिखायेगा। फिर मैं शफाअत करूंगा तो वह मेरे लिए एक सीमा निर्धारित कर देगा तो मैं उन्हें नरक से निकाल कर स्वर्ग में प्रवेश दिलाऊँगा। रावी (यानी हदीस वर्णन करने वाले) कहते हैं : तो मैं नहीं जानता कि आप ने तीसरी बार या चौथी बार में फरमाया : ''तो मैं

कहूँगा : ऐ मेरे पालनहार! नरक में केवल वही आदमी बचा है जिसे कुरआन ने रोक लिया है।'' अर्थात उसके ऊपर सदैवच नरक में रहना अनिवार्य हो गया है। (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 193)

तो क़ियामत के दिन महान शफाअत अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए प्रमाणित है – तथा आप अपनी उम्मत के अवज्ञाकारियों के लिए भी शफाअत करेंगे – जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : ''मेरी उम्मत के बड़े बड़े गुनाह करने वालों के लिए मेरी शफाअत।'' इसे तिर्मिज़ी (हदीस संख्या : 2435) ने रिवायत किया है, और कहा है कि : इस तरीक़ से हसन सहीह गरीब है।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफाअत कई कारणों द्वारा प्राप्त होगी, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

- **तौहीद (एकेश्वरवाद) का कलिमा कहने में इख़्लास (ईमानदारी) से काम लेना**, और वह इस प्रकार की मात्र अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए एकेश्वरवाद व एकत्व को सिद्ध किया जाए और उसमें किसी अन्य को साझी न

किया जाए। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की मरफूअ हदीस में आया है कि : ''मेरी शफाअत का सबसे अधिक सौभाग्यशाली व्यक्ति वह है जिसने अपने दिल की शुद्धता (ईमादारी) से ला इलाहा इल्लल्लाह कहा।'' (सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 6570).

- **अज़ान के शब्दों को दोहराना और अज़ान से फारिग होने के बाद की वर्णित दुआ पढ़ना,** जैसाकि जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की मरफूअ हदीस में आया है कि ''जब तुम अज़ान सुनो, तो उसी तरह कहो जिस तरह वह (यानी अज़ान देनेवाला) कहता है, फिर मेरे ऊपर दरूद भेजो ; क्योंकि जिसने मेरे ऊपर एक बार दरूद भेजा उसकी वजह से अल्लाह उसके ऊपर दस रहमतें अवतरित करेगा, फिर मेरे लिए अल्लाह से वसीला मांगो ; क्योंकि यह स्वर्ग में एक स्थान है जो अल्लाह के किसी विश्वासी बंदे के लिए ही उचित है, और मुझे आशा है कि वह मैं ही हूँ, अतः जिसने मेरे लिए वसीला मांगा, उसके लिए मेरी शफाअत निश्चित हो गई। (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 384)

❖ **अधिक से अधिक नफ़्ल नमाज़ें पढ़ना,** चुनाँचे रबीआ बिन कअब की हदीस में आया है कि उन्हों ने कहा : मुझसे अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा : ''मुझसे मांगो, मैं तुझे प्रदान करूँगा'', मैं ने कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर! मुझे मोहलत दीजिए कि मैं अपने मामले में चिंतन कर सकूँ। आप ने फरमाया : ''तुम अपने मामले में चिंतन कर लो।'', तो मैं ने मननचिंतन किया, और कहा : दुनिया का मामला समाप्त हो जायेगा, अतः मैं इस से बेहतर कोई चीज़ नहीं पाता कि उसे मैं अपने लिए परलोक के दिन के लिए ले लूँ। अतः मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गया, तो आप ने मुझसे पूछा : ''तुम्हारी ज़रूरत क्या है ?'' तो मैं ने कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर ! आप मेरे लिए अपने पालनहार के पास शफाअत कर दीजिए कि वह मुझे नरक से मुक्ति प्रदान कर दे, तो आप ने फरमाया : ''तुम्हें इसका किसने आदेश दिया है ?'' मैं ने कहा : नहीं, अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के पैगंबर, मुझे किसी ने भी इसका हुक्म नहीं दिया है, परंतु मैं ने अपने मामले में चिंतन किया तो देखा

कि दुनिया, दुनिया वालों से चली जाने वाली है, तो मैं ने पसंद किया कि अपने परलोक (आख़िरत) के लिए कुछ ले लूँ, तो आप ने फरमाया : "तो तुम अपने आप पर अधिक से अधिक सज्दों (यानी नमाज़ों) के द्वारा मेरी मदद करो।" इसे अल्बानी ने इरवाउल गलील (2/208) में हसन कहा है।

❖ **पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सुबह व शाम दस बार दरूद भेजना**, अबुद दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया : "जिस व्यकित ने मेरे ऊपर सुबह करते समय दस बार दरूद भेजा और शाम करते समय दस बार दरूद भेजा, उसे क़ियामत के दिन मेरी शफाअत प्राप्त होगी।" (सहीहुल जामे (6375), फिर शैख अल्बानी इस से फिर गए और सिलसिलतुल अहादीस अज़-ज़ईफा (हदीस संख्या : 5788) में इसे ज़ईफ क़रार दिया।

❖ **नवजवानों की नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत पर पालन पोषण और प्रशिक्षण के साधनों में से : आपकी जीवनी की जानकारी, आपके मार्गदर्शन, आपके**

तरीके़, आपकी नैतिकता व शिष्टाचार, आपकी प्रतिष्ठा और आपका दिल मोमिनों के लिए जिस दया व करूणा को समोए हुए था उसका वर्णन और चर्चा करना।

ज़ोहरी –रहिमहुल्लाह– कहा करते थे : मग़ाज़ी (पैगंबर द्वारा लड़े गए युद्धों) के विज्ञान में लोक व परलोक का ज्ञान है। (अल जामि लि–अखलाकि़र–रावी 2/195)

तथा उन (पूर्वजों) के अपने बच्चों को पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी और आपके सराया (वे लड़ाईयाँ जिनमे पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं उपस्थित नहीं थे) की शिक्षा देने पर लालसा और उत्सुकता का हाल यह था कि उन्हों ने प्राथमिकता के एतिबार से उसे क़ुरआन करीम के समान क़रार दिया था।

ज़ैनुल आबिदीन अली बिन अल–हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : ''हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मगाज़ी और सराया की शिक्षा देते थे जिस तरह कि हम क़ुरआन की सूरत की शिक्षा देते थे। (अल जामि लि–अखलाकि़र–रावी 2/195).

इसमाइल बिन मुहम्मद बिन सअद बिन अबी वक़्क़ास – रज़ियल्लाहु अन्हुम – से वर्णित है कि उन्हों ने कहा :

मेरे पिता हमें मगाज़ी की शिक्षा देते और उन्हें हमारे लिए गिनकर बताते थे, और कहते थे : ऐ मेरे बेटे ये तुम्हारे बाप दादा (पूर्वजों) के कारनामे हैं, अतः इनके चर्चा और वर्णन को नष्ट न करो।'' (अल जामि लि–अखलाकि़र–रावी 2/195).

हम उपर्युक्त बातों में ऐसे पड़ाव पाते हैं जिनसे हम पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्यार से भरे जीवन के लिए मार्ग व्यय लेते हैं, जैसाकि सहाबा और पुनीत पूर्वजों – रज़ियल्लाहु अन्हुम – ने उसे जिया है, अबदह बिन्त खालिद बिन मादान कहती हैं : खालिद बिस्तर पर नहीं आते थे मगर वह अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अपने शौक़ तथा आपके मुहाजिरीन व अनसार सहाबा के प्रति अपनी अभिरूचि की चर्चा करते थे, वह उनका नाम लेते थे और कहते थे : वे लोग मेरे मूल आधार और शाखा हैं, उन्हीं के लिए मेरा दिल तड़पता (उत्सुक व अभिलाषी) है, उनके प्रति मेरा शौक़ लंबा हो गया, मेरे पालनहार तू मुझे शीघ्र अपने पास उठा ले, यहाँ तक कि उन्हें नींद आ जाती थी।

तथा इसहाक़ अल–तुजैबी ने फरमाया :

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा आपकी मृत्यु के बाद जब आपका चर्चा करते थे तो उनपर भय तारी हो जाता था, उनके रौंगटे खड़े हो जाते थे और वे रो पड़ते थे। तथा इमाम मालिक ने – जबकि उनसे अययूब सख़्तियानी के बारे में पूछा गया था – फरमाया : मैं ने तुम्हें किसी से हदीस नहीं बयान की मगर अययूब उससे बेहतर हैं। तथा उन्हों ने फरमाया : उन्हों ने दो हज्ज किए, तो मैं उन्हें देखता रहता था, और मैं उनसे कोई चीज़ नहीं सुनता था सिवाय इसके कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चर्चा किया जाता था तो वह रोने लगते थे यहाँ तक कि मुझे उन पर दया आती थी।

तथा मुसअब बिन अब्दुल्लाह फरमाते हैं :

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चर्चा किया जाता था तो इमाम मालिक का रंग बदल जाता था, और वह झुक जाते थे यहाँ तक कि यह उनकी सभा के लोगों पर कठिन हो जाता था, तो उनसे एक दिन इसके बारे में कहा गया तो उन्हों ने कहा : यदि तुम वह चीज़ देख लो जो मैं देखता हूँ,

तो जो कुछ तुम देखते हो उस का मेरे ऊपर इनकार न करते, मैं मुहम्मद बिन मुन्कदिर को –जो कि क़ारियों के सरदार थे – देखता था कि हम उनसे कभी किसी हदीस के बारे में प्रश्न करते तो वह रोने लगते यहाँ तक कि हमें उन पर दया आती थी।

तथा साबित अल–बुनानी ने अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा : मुझे अपनी वे दोनों आँखें दो जिनके द्वारा आप ने अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है ताकि मैं उन्हें चुंबन करूँ।

तथा जुबैर बिन नुफ़ैर अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने कहा :

हम एक दिन मिक़दाद बिन अल–असवद के पास बैठे थे कि उनके पास से एक आदमी गुज़रा, तो उसने कहा : सौभाग्य है इन दोनों आँखों के लिए जिन्हों ने अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है, अल्लाह की क़सम! हमारी यह चाहत है कि हम ने वह चीज़ देखी होती जो आप ने देखी है और हमने उस चीज़ का मुशाहदा किया होता जो आपने मुशाहदा किया है।

ऐ अल्लाह तू हमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के नेक लोगों में से बना, और क़ियामत के दिन हमें उनके दल में उठा।